मासूम मन का जादू

बिएट्रिस कोरदो



मासूम मन का जादू

बिएट्रिस कोरदो

अनुवाद

अंजनी भूषण



राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

प्रथम संस्करण

सितंबर 2008 भाद्रपद 1930

पुनर्मुद्रण

जुलाई 2012 श्रावण 1934

जुलाई 2020 श्रावण 1942

PD 145T RPS

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

₹ 35.00

एन.सी.ई.आर.टी. 80 जी.एस.एम. वॉटरमार्क पेपर पर मुद्रित।

सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016, द्वारा प्रकाशन प्रभाग में प्रकाशित तथा राज टेक्नोप्रिंट, ए-48, सेक्टर-63, नोएडा 201 301 (उ.प्र.) द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-844-7

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुन: प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.आर.टी.ई. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110 016 — **दूरभाष** : 011-26562708

108, 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III इस्टेज
बेंगलुरु 560 085 — **दूरभाष** : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 — **दूरभाष** : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप
पनिहटी
कोलकाता 700 114 — **दूरभाष** : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगांव
गुवाहाटी 781 021 — **दूरभाष** : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग : *अनूप कुमार राजपूत*

मुख्य संपादक : *श्वेता उप्पल*

मुख्य उत्पादन अधिकारी : *अरुण चितकारा*

मुख्य व्यापार प्रबंधक : *विपिन दिवान*

उत्पादन सहायक : *मुकेश गौड़*

सज्जा *अमित श्रीवास्तव*

आवरण *ब्लू फिश*

1



वह घर गली से नहीं दिखता था। वह बगीचे के बीचोबीच बना था और चारों ओर से लगे पेड़ उसे तेज़ हवा से बचाते थे। आसमान को छूते हुए ये कोनिफ़र (शंकु) वृक्ष थे। उनके गहरे हरे पत्तों एवं काँटेदार तने के साथ पीले पड़ते पत्ते तथा झाड़ियों में खिले फूलों की पंखुड़ियाँ भी शामिल थीं। मेहमान और आने-जाने वाले फाटक की तरफ़ देखकर हमेशा कहते थे, "कितना सुंदर बगीचा है" या "मज़ेदार है ना!" और एक दिन तो एलिस और टब्बू ने किसी को कहते सुना, "यह तो चमत्कारी बगीचा है।" इस बात से वे बिल्कुल हैरान नहीं हुए। यह तो उन्हें पता ही था। कुछ लोगों को यह बगीचा काफ़ी बड़ा लग सकता था और कुछ को छोटा। "यह सब तो तुलना की बात है", एलिस की माँ ने कहा। यहाँ रहने वाले एलिस और टब्बू के लिए यह बगीचा ठीक-ठाक था।

एलिस सिर्फ़ चार साल की है पर वह अपने को 'लगभग पाँच' की बताती है, जो पूरी तरह से सच नहीं है। अपने पूरे परिवार की तरह वह भी बड़े-बड़े लंबे शब्द इस्तेमाल करती है, हालाँकि वह खुद बड़ी नहीं है पर है वह प्यारी। टब्बू बिल्ला है और वह हर वक्त उसके साथ रहता है। एलिस अक्सर उसे 'बिल्ला' कहकर बुलाती है और अधिकतर वह इस बात का बुरा नहीं मानता। अपनी खुद की राय में वह बहुत शालीन है पर वह हमेशा प्यारा नहीं लगता। वह कोई मामूली बिल्ला नहीं है। एलिस और खुद वह भी यह राज़ जानते हैं कि वह एक जादुई बिल्ला है। वे एक-दूसरे को बहुत पसंद करते हैं।

टब्बू एक भूरा और सुनहरा बिल्ला है और उसकी आँखें हरी हैं। उसकी अगली टाँगें मोटी-मोटी गपलू-सी हैं और उन पर सुनहरी धारियाँ हैं। उन्हें देख ऐसा लगता है जैसे कोई फुटबॉल का खिलाड़ी बढ़िया जुराबें पहने हुए हो। एलिस नाज़ुक और फुर्तीली है, वह अपने पंजों के बल इतने हल्के-हल्के दौड़ा करती है मानो कोई हल्की-सी परी हो। उसके बाल सुनहरे हैं। साथ ही छोटे और सीधे हैं।

2

वे लॉन में साथ-साथ बैठे हुए थे। "ओ प्यारे," उसने बिल्ले से कहा, "काश, मेरे बाल जल्दी से बड़े हो जाएँ! मेरा चोटियाँ और पोनीटेल बनाने का बहुत मन है। मैं इन्हें लंबा करने के लिए क्या कर सकती हूँ?" टब्बू ने ऊँघते हुए उसे देखा और ज़ोर से उबासी ली। वह मुँह पर पंजा रखना भी भूल गया और बड़े उजड्डपन से अपनी गुलाबी जीभ और सारे के सारे सफ़ेद नुकीले दाँत दिखाए। "कुछ ज़्यादा नहीं," उसने जवाब दिया। एलिस ने कहा, "तुम थोड़े भी मददगार नहीं हो!" बड़ी देर तक बिल्ला अपनी सोच में खोया रहा। जब काफ़ी देर हो गई तो एलिस ने उसकी नाक में फूल से गुदगुदी की ताकि उसको याद रहे कि वह अब भी वहीं बैठी है। "मैं अब और नहीं सोचूँगा," बिल्ले ने कहा। "हम खेतों के उस पार अपने दोस्त जनाब पूसो से मिलने जाएँगे। उन्हें पता होगा।" अब बिल्ले ने तो हमेशा एलिस को यही जताया था कि वह खुद हर जगह जा चुका है और उसको सब पता है, तो एलिस को जनाब पूसो की बात सुनकर काफ़ी हैरानी हुई।

फिर भी, टब्बू की अगुवाई में वे चल पड़े। घास काफ़ी लंबी थी और एलिस की टाँगों को गुदगुदा रही थी। वे तेज़ी से आगे नहीं बढ़ पा रहे थे क्योंकि रास्ते में कई फूल थे जिन्हें चुना जा सकता था और बहुत सारे डैंडेलियन फूलों के गुच्छों को उड़ाकर पता लगाना था कि समय कितनी तेज़ी से दौड़ रहा है। "देखो तो, कितनी अच्छी काउ-पार्सले है!" एलिस ने कहा, "कुछ लोग इसे रानी का झालर भी कहते हैं।" बिल्ले को कोई दिलचस्पी नहीं थी। उसने बिल्कुल ध्यान नहीं दिया। "अब हमें कितनी दूर और चलना है?" एलिस ने पूछा। "मैं नहीं कह सकता कि तुम्हारे लिए वह कितना दूर है", टब्बू ने थोड़ा झल्लाकर कहा। वह भी थक रहा था और काफ़ी गर्मी थी। "मगर मेरे लिए हैं लगभग सौ पंजे-कदम और फिर खड़ी सीढ़ी के ऊपर।"

आखिरकार वे जनाब पूसो की मनपसंद जगह पर पहुँच गए। वहाँ वे डेज़ी के फूलों के कालीन पर सो रहे थे। वे बड़े और बहादुर तथा बहुत ही काले थे। सिर्फ़ उनका वास्कट और दस्ताने सफ़ेद थे जिन्हें वे हमेशा चमचमाता हुआ और साफ़ रखते थे। "अहं-अहं, पर जनाब पूसो, मुझे पहचाना, मैं आपका पुराना दोस्त टब्बू?" बिल्ले ने पूछा। पूसो को याद आ गया पर उन्हें बिल्ले का यूँ परेशान करना अच्छा नहीं लगा। "ये टब्बू और एलिस भी क्या मुसीबत हैं!" उन्होंने मन में सोचा, पर उनकी माँ ने उन्हें अच्छा व्यवहार सिखाया था इसलिए उन्होंने नम्रता से सुना कि बिल्ला और एलिस वहाँ क्यों आए हैं?

"कृपया बताइए, मैं अपने बाल बढ़ाने के लिए क्या करूँ?" एलिस ने पूछा। जनाब पूसो ने सोचने में बिना समय लगाए कहा, "इसका एक ही उत्तर है।" फिर उन्होंने घोषणा की, "समय... समय पर ही कुछ होगा।" एलिस उदास हो गई। सब यही कहते थे। तभी अचानक पूसो उठ बैठे। पीठ एकदम सीधी और बड़ी शालीनता से भाषण देने को तैयार। "मेरी मूँछों को देखो, हैं न लंबी और घनी?" उन्होंने दावा किया। सचमुच वे बड़ी शानदार थीं। उन्होंने मूँछों को हल्का सा झटक कर असरदार ढंग से कहा, "जब मैं बच्चा था। तब ये छोटी थीं, लेकिन तब भी एकदम बढ़िया और मेरे कद के हिसाब से बिल्कुल ठीक थीं। इसलिए, मुझे पक्का पता था कि अगर मेरी मूँछें किसी छोटी सी जगह से

निकल पाएँ, तो मेरा पूरा शरीर वहाँ से आराम से निकल सकता है। जैसे-जैसे मेरी उम्र बढ़ी और मैं बड़ा हुआ, वैसे-वैसे मेरी मूँछें भी बड़ी हुईं और हमेशा वे मेरे शरीर के हिसाब से ठीक रहीं। ऐसे ही तुम्हारे बाल अपने समय पर बढ़ेंगे।" उन्होंने अपने दाएँ पंजे को हिलाते हुए बात खत्म होने का इशारा किया। और बस हो गया; वे और बातचीत नहीं करना चाहते थे।

हाँ, एलिस ने वह तो नहीं सुना जो वह सुनना चाहती थी, फिर भी दोपहर अच्छी कटी।

वे चलने के लिए मुड़े। अब तक दोनों को भूख लग चुकी थी इसलिए वे दौड़ते-भागते घर लौटे। एलिस को उम्मीद थी कि मुर्गियों ने भूरे अंडे दिए होंगे जिन्हें वह चाय के साथ खाएगी और सचमुच मुर्गियों ने अंडे दिए थे। टब्बू को उम्मीद थी कि वह प्लेट भर मछली खाएगा और उसने खाई।

2



कल तो एलिस और टब्बू को लगा था कि गर्मियों का सुहाना मौसम हमेशा वैसा ही बना रहेगा लेकिन आज सुबह देखा तो सूरज छिपा हुआ था। उसकी एक झलक पाने के लिए आसमान को देखती एलिस के मन में एकाएक सवाल उठा कि क्या सूरज की भी कोई माँ है। उसने इस बारे में कभी किसी से कुछ नहीं सुना था परंतु हाँ चंद्रमा और उस पर रहने वाले उस आदमी के तो रिश्तेदार ज़रूर होंगे। फिर सूरज का कोई रिश्तेदार क्यों नहीं होगा? लेकिन सूरज की माँ होती तो ज़रूर माँ ने उससे यह कहा होता कि "बंद करो यह फ़ालतू का मुँह फुलाना और रोना-धोना! चेहरे पर मुस्कान लाओ और तुरंत बाहर जाओ।" एलिस को चंद्रमा बहुत प्यारा लगता था। दिन ढलते ही वह बगीचे को कैसे एक चाँदी जैसी जादुई जगह के रूप में बदल देता था। जब चाँद काले बादलों और सितारों के बीच ओझल होने लगता था और वह ऊपर देखती थी तो उसे पक्की तौर पर यह महसूस होता था कि वहाँ अकेला बैठा वह बूढ़ा आदमी उसे देखकर मुस्करा रहा है।

एलिस एक छोटे से हरे टीले पर आराम से बैठी थी और उसने अपने पैर सामने की ओर सीधे फैला रखे थे। उसकी नज़रें एक सोनपंखी (लेडीबर्ड) पर थीं। सुर्ख लाल और चमकती सोनपंखी पर जो उसकी सफ़ेद चप्पल पर टहल रही थी। एलिस ने बिल्ले की ओर देखा। वह पिछले कम से कम आधे घंटे से थोड़ा-थोड़ा करके अपने को धो-पोंछ रहा था और अपनी मूँछें ठीक-ठाक कर रहा था। एलिस ने सोचा उसे थोड़ा तंग किया जाए। "काश, मेरे पास एक कुत्ता होता!" वह बोली। टब्बू ने तुरंत अपना पंजा नीचे किया और उसका घुरघुराना बंद हो गया। अब उसकी बारी थी कि बिना कुछ बोले अपनी नाराज़गी ज़ाहिर करे। उसकी पूँछ थोड़ी-सी कँपकँपाई और सिर से लेकर पूँछ के आखिरी सिरे तक से उसकी खीज और नापसंदगी साफ़ टपकती दिखाई दी।

एक अजीब सी चुप्पी छा गई जिसे दोस्ताना अंदाज़ से भरे एलिस के इन शब्दों ने तोड़ा, "कभी-कभी जब तुम्हारा सोने का मन कर रहा होगा, मैं उसके साथ बाहर जाकर मज़ा कर सकूँगी, मगर हाँ एक कुत्ते का बच्चा अगर कभी मुझे मिल भी गया तो भी मेरे पहले और सबसे अच्छे दोस्त तुम ही रहोगे। मुझे वे मज़ेदार बातें और कोई भी नहीं बता सकता जो तुम्हें मालूम हैं।" टब्बू ने यह बात ध्यान से सुनी और मन ही मन सोचा कि शायद यह विचार बहुत बुरा भी नहीं है। वह अब उतना छोटा नहीं था और कई बार वह ऐसा भी चाहता था कि उसे कोई परेशान न करे। आश्चर्य की बात है कि ठीक उसी वक्त एलिस उससे पूछ बैठी, "तुम्हारा असली जन्मदिन कब है बिल्ले? एकदम सच-सच बताओ कि तुम कितने बड़े हो।" एलिस की माँ बिल्ले की उम्र उस दिन से जोड़ती थीं जिस दिन से वह उनके पास रहने आया था।

टब्बू ने कहा, "और बिल्लियों की तरह ज़ाहिर है कि मेरे भी नौ जन्म होंगे लेकिन यह तो हम जादुई बिल्लियों को भी नहीं पता कि एकदम कहाँ से पहला जन्म शुरू होता है और कब और कहाँ उनमें से हर एक जन्म खत्म होता है। मगर हमसे यह उम्मीद की जाती है कि हम मुसीबत के समय भी अच्छे बिल्ले बने रहें और आगे क्या होगा इस बात पर ज़्यादा ध्यान नहीं दें।"

"अच्छा, तो क्या इसी वजह से यह कहा जाता है कि *क्यूरियौसिटी किल्स द कैट* यानी अत्यधिक जिज्ञासा बिल्ले-बिल्लियों की मौत का कारण बनती है?" एलिस चकित होकर बोली। टब्बू का चेहरा थोड़ा फक-सा पड़ गया परंतु ऊपर से वह कुछ सख्ती दिखाते हुए बोला, "मैं इस बारे में कुछ नहीं जानता और कुछ जानना भी नहीं चाहता।" एलिस ने प्यार से अपनी बाँहें उसके गले में डाल दीं परंतु ठीक उसी समय उसे माँ के बुलाने की आवाज़ सुनाई दी। इसलिए एलिस ने उसका सिर प्यार से थपथपाया और फिर वह घर के अंदर भाग गई।

बिल्ले ने अपने पंजे अंदर को समेटे और झपकी लेने की तैयारी करने लगा। वह धीमे से अलसाया-सा होकर घुरघुरा रहा था।

3



खिड़कियों के पार एक अजीब सफ़ेद दुनिया थी। वह इतनी दूर तक फैली थी जहाँ नज़र भी नहीं जाती थी और यह बता सकना करीब-करीब नामुमकिन था कि कहाँ उनका बगीचा खत्म होता है और खेत शुरू होते हैं। खिड़की से लगी सीट की कुशन पर कोहनियाँ टिकाए टब्बू की बगल में बैठी एलिस यह सोच रही थी कि रात-भर में कितने हिमकण (स्नोफ़्लेक्स) आसमान से छिटककर नीचे गिरे होंगे। "करोड़ों करोड़", उसने बिल्ले को बताया क्योंकि उन हिमकणों ने अपनी बड़ी सी सफ़ेद चादर के नीचे सारी चीज़ें जो छिपा रखी थीं।

हर एक पत्ती और डाली चमचमा उठी थी। जाड़े के आसमान के सामने अक्सर उजड़े और काले-से दिखाई देते पेड़ बर्फ़ की मणियों से लद गए थे और ऐसे झिलमिला रहे थे मानो पन्नियों की कतारें हों। जब भी कोई चिड़िया किसी टहनी पर आ बैठती, पूरी टहनी कँपाकँपा उठती और असंख्य छोटे-छोटे हीरों की बौछार बर्फ़ से ढकी धरती पर आ बिछती।

आज की सुबह कोई भी चीज़ चमचमा नहीं रही थी। बस, एक चौंकाने वाली सफ़ेद चुप्पी छाई थी। पिघली बर्फ़ वाली डाली के एक छोटे हिस्से पर चहचहाती भूखी चिड़ियाँ झुंड बनाकर बैठी सुबह का नाश्ता कर रही थीं। उनकी चहचहाहट ही कभी-कभी उस चुप्पी को तोड़ देती थी। सबके लिए खाने को बहुत था परंतु वे फिर भी मतलबी होकर एक दूसरे को धक्का दे रही थीं और गिरीदार फलों को इकट्ठा करने के लिए चोंचें मार रही थीं। सेब के पेड़ पर टाँगे गए गिरीदार फलों के दो डिब्बों पर शैफ़िंच (बीज खाने वाली एक छोटी यूरोपीय चिड़िया) चिड़ियों के दल मँडरा रहे थे। वे उसकी डोरियों को पंजों से कसकर पकड़े थीं। जब वे गिरियाँ खाने को लपकतीं तो गुँथे मोतियों की कतारों की तरह चमकती वे डोरियाँ हवा में इधर-उधर लहराने लगती थीं। उन्हें ऐसा करते देख दो रॉबिन चिड़ियाँ और कई सारी गौरैया भी उनके साथ आ मिली थीं। पाँव हवा में टाँगे-टाँगे ऐसे खाना खा रही थीं मानो यह उनकी आम आदत हो। वे भी कुछ कम लालची नहीं निकलीं! वे सब पूरी तरह अपने काम में जुटी थीं।

एलिस बाहर जाकर बर्फ़ का आदमी *(स्नो-मैन)* बनाने को बेताब थी परंतु उसे बताया गया था कि जब तक दिन थोड़ा गर्म न हो जाए उसे इंतज़ार करना होगा। टब्बू भी इस बात से पूरी तरह सहमत था। वह आग के पास आकर बैठ गया था और धीरे-धीरे लपटों के और नज़दीक सरकता जा रहा था। एलिस की माँ ने भी उसे सावधान किया कि वह और नज़दीक आया तो अपनी नाक और मूँछें जला बैठेगा लेकिन लगता था उसे इस बात की कोई परवाह नहीं थी। एलिस की माँ बहुत जल्दी में थीं और तेज़ी से इधर-उधर आ-जा रही थीं। "उम्मीद है गाड़ी स्टार्ट हो जाएगी और मुझे बर्फ़ में फँसे रहना नहीं पड़ेगा," इस आखिरी चेतावनी के साथ ही वे घर से बाहर निकल गई थीं।

एलिस खिड़की से उन्हें जाते देखती रही। उसकी माँ लंबी और पतली थीं। आज अपना भारी-भरकम ऊनी कोट पहने होने के कारण वे काफ़ी मोटी दिख रही थीं। तब भी एलिस को यह देखकर खुशी हुई कि लाल रंग की पतलून और

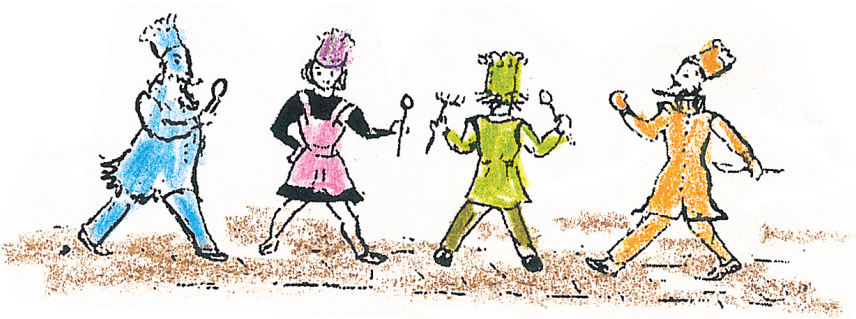
ऊँचे बूट पहनकर जाती उसकी माँ के पैर जो कि बर्फ़ के ऊँचे ढेरों को लाँघते हुए गराज की ओर बढ़ रहे थे, अब भी लंबे और पतले-पतले हैं।

खिड़की से हटते हुए एलिस कालीन पर टब्बू की बगल में नीचे सरक आई और आराम से बैठ गई। कुछ मिनटों तक वे दोनों आग को घूरते रहे।

एलिस लट्ठों के इर्द-गिर्द लपकती लपटों को देखने लगी। उनके रंग लगातार बदल रहे थे मानो उनकी सुनहरी, लाल और हरी जीभें उन लट्ठों को चाट रही हों। अचानक चिमनी से तेज़ी से छोटी-छोटी चिनगारियाँ उड़-उड़कर बाहर निकलने लगीं। वे कुछ मिनट हवा में इधर-उधर नाचतीं। चमकते हुए कभी लाल तो कभी सुनहरी लगतीं और फिर आग में जाकर गुम हो जातीं। "देखो बिल्ले, कजली परियाँ देखो। कितनी सुंदर हैं ना!" उनका दूसरा दल आया। खुशी से इधर-उधर नाचा। कुछ ने थोड़ी देर को मानो चिमनी के पीछे रुककर आराम किया लेकिन उनमें से ज़्यादातर लट्ठों के नीचे से लपकती सुंदर जगमगाती लपटों की ओर बढ़ने से खुद को न रोक सकीं और अपनी दूसरी सहेलियों से जा मिलीं और वहीं गुम हो गईं।

"बेवकूफ़! सबके सब बेवकूफ़ हैं।" टब्बू बोला। और इसी के साथ उसने आँखें कसकर बंद कर लीं और ज़्यादा आराम से लेट गया। इस बढ़ती आरामदेह गर्माहट में एलिस के लिए अपनी आँखें खुली रखना भारी पड़ने लगा था। जल्दी ही वह भी सो गई।

4



"इस बार सर्दी का मौसम लंबा रहा," एलिस बिल्ले से बोली। उसने अपनी माँ को एक सहेली से यह कहते सुना था। सर्दी की लंबाई कैसे नापी जाती होगी, वह सोचने लगी। क्या कोई फुटा लेकर उससे हर साल सर्दी को नापता होगा? अगर ऐसा है तो वह कहाँ से शुरू करता होगा और कहाँ जाकर खत्म? सोचते-सोचते उसने आखिर यही नतीजा निकाला कि बर्फ़ का मौसम शुरू होने से पहले किसी एक दिन सर्दी आ पहुँची होगी। शायद यह वही समय रहा होगा जब पेड़ों की सारी पत्तियाँ भूरे रंग की हो गई थीं और ज़मीन पर गिरकर एक मोटे कालीन की तरह बिछ गई थीं। उनको चरमराते हुए उन पर चलने में कितना मज़ा आया था। नवंबर की उस रात को सर्दी बहुत ज़्यादा थी, जब उन्होंने बड़ी सी बॉनफ़ायर जलाई थी। उसे याद हो आया कि वह आतिशबाज़ी कितनी मज़ेदार और लुभावनी लगी थी। आग की लपटों से निकलते रंगीन सितारे चारों दिशाओं में फैल रहे थे और वे आकाश में चमकते असली सितारों से भी ज़्यादा चमकदार थे। बच्चे खुशी से चीख-चिल्ला रहे थे और बर्फ़ीली हवा में छूटती उनकी साँसों से भाप के गोले निकल रहे थे।

उसके कुछ दिन बाद ही क्रिसमस आ गई थी। तब चर्च में धार्मिक गीत कैरल्स गाए गए थे और जन्मोत्सव का एक नाटक भी खेला गया था। एलिस

वह कभी नहीं भूल सकेगी। उसने एक जोड़ी पंख लगाए थे क्योंकि वह उसमें देवदूत बनी थी और उसे ऐसा करना बहुत अच्छा भी लगा था। फिर दावतें हुईं थीं, क्रिसमस के पेड़ थे, उपहार थे, ओह, कितनी देर तक मज़ा आता रहा था!

एलिस की माँ और उनकी सहेली दोनों का कहना था कि जैसे ही पिघलती बर्फ़ के नीचे से स्नोड्रॉप के फूल झाँकते दिखाई देने लगेंगे, उन्हें पता चल जाएगा कि सर्दी खत्म होने को है।

यह सुनने के बाद से एलिस कई बार बगीचे में उन फूलों को ढूँढ़ चुकी थी पर सब बेकार, क्योंकि सर्दी अभी मौजूद थी। कई गड्ढों पर अब भी बर्फ़ जमी थी। पूरी ताकत लगाकर उस पर कूदने के बाद उसने बर्फ़ को चटका तो दिया परंतु वह वैसी ही सख्त और मज़बूत बनी रही।

"टब्बू, तुम इस बारे में क्या सोचते हो?" उसने प्रश्न किया परंतु टब्बू तो सर्दी की लंबाई को लेकर अपना दिमाग कतई परेशान नहीं करने वाला था। उसकी तो हड्डियाँ ही उसे बता देती थीं कि कब बागीचे में बैठकर मौसम का आनंद लिया जा सकता है या कब आग के नज़दीक बैठकर उसकी गरमाहट का आनंद लिया जाए। और इस समय भी वह एकदम वही कर रहा था। अँगूठे अंदर मोड़े वह सपनीली आँखों से आग की लाली को देख रहा था और सोच रहा था कि एलिस इन दिनों कुछ ज़्यादा ही सवाल करने लगी है। अगर कुछ समझदारी के सवाल पूछे जिनका जवाब वह बस 'हाँ' या 'ना' में दे सके तो उसे कोई दिक्कत नहीं, लेकिन उसके सवाल तो दिन पर दिन और उलझन भरे होते जा रहे हैं। उसे आशा थी कि सवालों और जवाबों का यह दौर लंबा न खिंचेगा।

थोड़ी सी देर की चुप्पी के बाद ही एलिस का सवाल फिर हाज़िर हो गया, "*ए स्टिच इन टाइम* यानी समय में एक टाँका लगाना, इसका क्या मतलब है? कहा जाता है कि समय गुज़रता है पर वह दिखाई तो देता नहीं और फिर टाँका लगाने के लिए उसे पकड़ेंगे कैसे?" टब्बू ने ठंडी साँस ली और बोला, "इन बातों का हमेशा वह मतलब नहीं होता जैसा शब्दों से लगता है।" साथ ही उसने आँखें कसकर बंद कर लीं और अपना सिर नीचे को लटका दिया। उसे उम्मीद

थी कि उसके ऐसा करने से एलिस चुप हो जाएगी। पर वह चुप नहीं हुई। "बिल्ले, तुम्हें मालूम नहीं है क्या?" अब वह यह तो नहीं चाहता था कि एलिस उसके बारे में ऐसा सोचे। इसलिए एक गहरी साँस लेकर झटपट बोला, "इसका मतलब यह है कि जैसे ही तुम अपनी जुराब में छेद देखो जो एक टाँके से सिला जा सके, तो उसे फ़ौरन सी डालो ताकि वह बड़ा न हो जाए और बाद में नौ टाँके न लगाने पड़ें।" फिर उसने अपने शरीर को एक सख्त गेंद की तरह गोल बना लिया, अपना चेहरा एक पंजे से ढक लिया और अपनी पूँछ अपने चारों ओर कसकर लपेट ली, अपना यह इरादा साफ़ ज़ाहिर करते हुए कि वह अब आगे एक शब्द नहीं बोलेगा।

एलिस को नींद बिल्कुल नहीं आ रही थी और उसके मन में ढेरों सवाल उफन रहे थे। साथ ही एक बात और जो बड़े लोग उससे कहते आए थे और इसका मतलब अब उसे पूरी तरह समझ में आ गया। वह थी कि 'बस अब बहुत हो गया!'

उसे लगा कि बिल्ला सचमुच में बहुत सहनशील है। वह पिछली बातें सोचने लगी और उसे वह बातचीत याद हो आई, जब वह बहुत छोटी थी, कुल तीन साल की और उसने बिल्ले से पूछा था, "*टू मैनी कुक्स स्पायल द ब्राथ* क्यों कहते हैं? यानी बहुत से खाना बनाने वाले हों तो खाना बिगड़ क्यों जाता है?" बिल्ले ने उसे बताया था कि उसका तो खयाल यह है कि वे कई सारे होते होंगे तो इधर-उधर पागलों की तरह बातें करते दौड़ते रहते होंगे जबकि अगर खाना बनाने वाला एक होगा तो वह ध्यान लगाकर काम करेगा और ज़ाहिर है वह खाना ठीक बना पाएगा।

उस समय गर्मी थी। हवा में मई के फूलों की मीठी महक समाई हुई थी और वह बैठी डेज़ी के फूलों को गूँथ रही थी।

अब उसने टब्बू पर नज़रें डालीं। उसकी खाल आग की रोशनी में चमक रही थी। वह पूरी एक जैसी लंबाई वाली नहीं थी क्योंकि उसका एक रिश्तेदार पूर्वज फ़ारस का था। बिल्ला सचमुच बहुत प्यारा था। अब तक तो वह अच्छी तरह सो चुका है, सोचकर उसने धीरे से हाथ आगे बढ़ाया और हल्के से बिल्ले

को छुआ। फिर दोबारा उसे पुचकारा। बिल्ले ने अपने आपको सीधा किया और अलसाई आँखों से एलिस की तरफ़ देखा।

बिल्ले का ध्यान खींचने के बाद एलिस बोली, "एक और बात वे कहते हैं कि द *साफ़्ट आंसर दैट टर्नेथ अवे ब्रॉथ* यानी मासूमियत भरा जवाब जो ब्रॉथ (शोरबे) को उलट दे। मुझे तो यह भी नहीं पता।" टब्बू ने आँखें तरेरीं, "शब्द *ब्रॉथ* नहीं है *रॉथ* है!" वह चिल्लाया, "और *रॉथ* का मतलब है ज़ोर का गुस्सा! और, अब आज तुमने एक सवाल भी और किया तो मैं गुस्से से फट पड़ूँगा!" पूँछ ज़मीन पर पटककर उसने जता दिया कि वह वाकई वही करेगा जो कह रहा है। एक बार तो एलिस से कोई उत्तर देते नहीं बना। उसके कानों में एक ही आवाज़ आ रही थी और वह थी टब्बू के लगातार पूँछ पटकने की। धीरे-धीरे आवाज़ हल्की पड़ती गई और फिर पूरी तरह रुक गई लेकिन बिल्ले की कमर अब भी सीधी और कड़ी ही बनी रही। बिल्ला बहुत ही अलग-अलग सा दिखाई दे रहा था।

बहुत सारी बातें थीं जो एलिस को समझ में नहीं आती थीं लेकिन अब आगे झुकते हुए वह बिल्ले के चौकन्ने हुए कानों में बुदबुदाई, "प्यार सबको जीत लेता है," और उसे चूम लिया। फिर वह यह देखने के लिए दौड़ गई कि उसकी चाय तैयार है या नहीं। साथ ही इसलिए भी कि वह बिल्ले के लिए दूध की मलाई उतारकर ला सके।

5



सूरज खुश दिख रहा था। पेड़ पूरी तरह लदे थे और उनके फूल–पत्तों के बीच से झाँकती सूरज की चमचमाती किरणें मानो आँखें मिचका रही थीं। बहुत ही सुहानी सुबह थी। एलिस की माँ बागीचे में फूल चुन रही थी। 'खुशबू कितनी मनमोहक है,' एलिस ने सोचा और फूलों को सूँघती और सराहती वह टब्बू के साथ बागीचे में घूमने लगी।

रात में बारिश हो चुकी थी, धीमी और सुहावनी बारिश। फूलों की पंखुड़ियों पर ओस की बूँदें अब भी पड़ी थीं और लाइलैक फूलों की खुशबू हवा में पहले से कहीं ज़्यादा असरदार होकर महक रही थी।

जैसे ही एलिस घर पहुँची, माँ की आवाज़ उनके कानों में पड़ी, "अब तुम दोनों कहीं इधर–उधर भटकने मत निकल पड़ना। मैं दस मिनट में तैयार होकर आती हूँ।" वे दोनों बागीचे में पड़ी बेंच पर बैठ गए। अब तो यह मान ही लेना होगा कि सर्दी खत्म हो चुकी है, एलिस ने सोचा। स्नोड्रॉप, डैफ़ोडिल और प्रिमरोज़ – सारे ही फूल एकाएक खूब सारे खिल आए थे। उसने अपने बालों को छुआ और ऐसा करते ही उसे जनाब पूसो की बताई बात याद आ गई। लग रहा था कि जैसे उस बात को बहुत लंबा समय हो गया और ठीक ही तो कहा

था पूसो ने। अब वह पोनीटेल या चोटी बना सकती थी। हाँ, बहुत लंबी नहीं, लेकिन उसके बाल लंबे तो हो ही रहे थे और एलिस इस बात से खुश थी। बिल्ला भी कुछ सोच रहा था। कुछ ही देर में बिल्ले का इरादा मटरगश्ती करने का था। "तैयार हो एलिस!" पुकार आई और साथ ही बजरी पर गाड़ी के पहियों के चलने की आवाज़ सुनाई दी। "अलविदा टब्बू!" कहते हुए एलिस माँ के पास भाग गई।

वे बाज़ार जा रहे थे। बाज़ार जाना एलिस को बहुत अच्छा लगता था। मुख्य सड़क के दोनों तरफ़ दुकानें थीं और एलिस को वहाँ अकेले छोड़ दिया जाता तो हर चीज़ को अच्छी तरह उलट-पलटकर देखने में वह घंटों बिता सकती थी। इसके विपरीत उसकी माँ तो जल्दी-जल्दी मछली जैसी कुछ चीज़ों को, जो हमेशा गाँव के बाज़ार में नहीं मिल पाती थीं, टोकरी में भरती हुई दुकानों के बीच से सरसराते हुए निकल जाती थी। इनमें से कुछ दुकानों में तो सामने ज़मीन पर चारों तरफ़ कपड़े धोने के साबुन की महल जैसी ऊँची ढेरियाँ लगी थीं। साथ ही पोंछे और झाड़न आदि करीने से सजाकर रखे गए थे, परंतु एलिस की इनमें कोई दिलचस्पी नहीं थी। बागीचे में लगाने वाले पौधों के डिब्बे, घर में लगाने वाले फूल और गमलों में लगे फूलों वाली दुकानें – सब खूब रंग-बिरंगी और अच्छी लग रही थीं और उसकी माँ को रोक भी लेती थीं। इधर एलिस को ज़्यादा मज़ेदार दुकानें वे लगती थीं जिन पर चमकते मोती और मालाएँ बिक रही होती थीं। अँगूठियाँ और जड़ाऊ पिन वगैरह भी तो उन्हीं दुकानों पर मिलते थे। एलिस के हिसाब से तो वे सब असली सोने के बने थे क्योंकि लाल, हरे और नीले रत्नों से जड़ी वे मालाएँ वगैरह खूब चमचमाती रहती थीं। साथ ही बहुत सी सुंदर पोशाकें भी हवा में लहराती दिखाई दे रही थीं। वे कोट वाले हैंगर्स पर टँगी थीं जो लोहे की बनी अलगनी पर लाइन से लटकाए गए थे।

अपनी पसंद की दुकान पर वह हमेशा ज़रूर रुकती थीं और आज भी हर बार की तरह कुछ मिनट उन्होंने वहाँ बिताए। जिस औरत की दुकान थी, वह बहुत अच्छी थी और हर बार उन्हें कुछ न कुछ नया, कोई नई प्लेट या नया गहना दिखाती थी। मन ही मन एलिस को इस बात का ताज्जुब होता था कि

उसकी माँ को ये पुरानी दुकानें इतनी पसंद क्यों हैं! सड़क पर आगे बहुत सी नयी दुकानें थीं जो कहीं ज़्यादा रंग-बिरंगी और अच्छी थीं और उसे लगता था कि वे ज़्यादा सुंदर भी हैं। लेकिन आज उन्होंने बस थोड़े से फल ही खरीदे। बाद में वे पिकनिक पर और ब्लूबैल्स फूल चुनने के लिए जाने वाले थे। कुछ फल उसी समय खाए जाने वाले थे। "मैं घर पहुँचने में ज़्यादा देर नहीं करना चाहती, तब एक-दो काम और निबटा सकूँगी और दोपहर के भोजन से पहले ही चाय का सामान पैक कर सकूँगी।" जब वे गाड़ी में बैठ रहे थे तब उसकी माँ ने कहा। परंतु अच्छे से अच्छा प्लान भी गड़बड़ाते देर नहीं लगती।

उस छोटे शहर से निकलकर वे घुमावदार सड़क पर आगे बढ़ रहे थे। फलती-फूलती लाल बैरी वाली हैथोर्न की बाड़ें बहुत सुंदर दिखाई दे रही थीं और चारों ओर फैली वसंत बहार की खुशबू बढ़ा रही थीं। एक गोलाकार मोड़ लेने के बाद उनके सामने की सड़क एकदम सीधी थी और शुरू में काफ़ी सुनसान भी, परंतु एकाएक चार मेमने पता नहीं कहाँ से दौड़ते हुए सड़क पर आ गए और उसकी माँ को ज़ोर से ब्रेक लगाना पड़ा। डर से सकपकाई एलिस तो रुँआसी हो गई और मेमनों को इधर-उधर को भागते देख "हम क्या करें, हम क्या करें?" कहकर रोने लगी। फिर दोनों गाड़ी से बाहर निकल आईं और देखने लगीं कि बाड़ में कहीं छेद तो नहीं या कोई फाटक तो खुला नहीं रह गया जहाँ से वे बाहर निकले हों। लेकिन मेमने आए कहाँ से, यह राज़ ही बना रहा।

इस समय तो सड़क पर शांति थी लेकिन भारी ट्रक और तेज़ चलने वाली गाड़ियाँ अक्सर छोटा रास्ता लेने इस पर आ जाती थीं और बिना मोड़ वाली सीधी-सपाट सड़क का फ़ायदा उठाते हुए बेपरवाह होकर तेज़ी से दौड़ती थीं। इसलिए मेमनों को तो बचाना ही था और वे दोनों उन्हें एक-एक करके पकड़ने को आगे बढ़ीं ताकि वापस बाड़ के दूसरी तरफ़ उन्हें उछालकर फेंक सकें। परंतु यह उतना आसान नहीं था जितना लगता था। अगर तुमने कभी चार उछलते-कूदते मेमने नहीं पकड़े हैं तो तुम नहीं समझ सकोगे कि यह कितना मुश्किल काम है। मेमने तितर-बितर होकर सड़क पर ऊपर-नीचे, इधर से उधर कूदने और दौड़ लगाने लगे और इस सबमें उन्हें खूब मज़ा आ रहा था। सूरज

की गर्मी बढ़ती जा रही थी। एलिस और उसकी माँ भी परेशान हो उठी थीं। "इससे कुछ फ़ायदा नहीं होगा," माँ बोलीं और दोनों ज़रा साँस-सी लेने के लिए कार से सटकर खड़ी हो गईं।

उसी समय एक और गाड़ी वहाँ आ पहुँची लेकिन अच्छा हुआ कि वह तेज़ नहीं चल रही थी। उन्हें देखकर ड्राइवर ने गाड़ी रोक दी। इस समय तक मेमने भी पास आकर खड़े हो गए थे और प्यार से उन सबकी ओर देख रहे थे। गाड़ी से एक युवक बाहर आया और उनकी मदद करनी चाही। "जल्दी ही तुम्हें खेतों में वापस पहुँचा दिया जाएगा," वह मेमनों से बोला। लेकिन मेमनों ने तो कुछ और ही सोच रखा था। वे फिर से तितर-बितर हो गए और पहले से भी ज़्यादा ताकत लगाकर इधर-उधर दौड़ने-भागने लगे। अब इस युवक की बारी थी हैरान-परेशान होने की। और अब एक बड़ा ट्रक मोड़ लेकर तेज़ी से आगे बढ़ा आ रहा था। वह भी आगे हलचल देखकर रुक गया और दो हट्टे-कट्टे जवान बाहर आए। उन्होंने भी मदद करनी चाही। चारों तरफ़ भागमभाग, चीख-चिल्लाहट और मेमनों के मिमियाने की आवाज़ें फैल रही थीं। वे सब अब हताश होने ही लगे थे कि एकाएक चारों मेमने आँखों से ओझल हो गए और तुरंत ही दूसरी तरफ़ खेतों में नज़र आए। वहाँ भोला सा मुँह बनाए वे चुपचाप लाइन बनाकर खड़े थे और सड़क पर खड़े लोगों के लाल और तमतमाए चेहरों को ताक रहे थे।

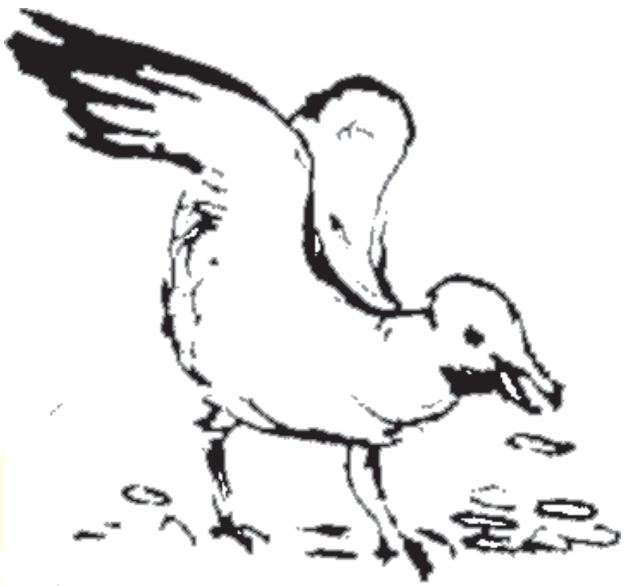
पाँचों लोग अचंभे में पड़ गए। 'ओह!' उनके मुँह से निकला। फिर सब ज़ोर से हँस पड़े और एक-दूसरे को धन्यवाद देकर अपने-अपने रास्ते चल दिए।

"कितने अच्छे लोग थे," एलिस बोली। "हाँ, अच्छे थे ना," माँ का जवाब था।

घर वापस आए पर दोपहर का खाना और पिकनिक की चाय की तैयारी से पहले इधर-उधर का कुछ और काम निबटाने के लिए समय नहीं बचा था। एक सहेली और एक दूसरी छोटी लड़की वहाँ आने वाली थी परंतु वह एक अलग कहानी है।

एलिस बस पल-भर को रुकी और उसने संतरे का रस साथ में लिया (मेमनों को पकड़ने में ज़ोर की प्यास जो लग आई थी) और टब्बू को ढूँढ़ने बाहर भागी। वह बाड़ के नज़दीक थोड़ी ऊँची घास पर बैठा था और बहुत ध्यान से झाड़ी को देख रहा था जहाँ कुछ नहीं था। शैतान मेमनों की बात उसे बताने की जल्दबाज़ी में एलिस के मुँह से शब्द साफ़ नहीं निकल पा रहे थे। वह चुप रहा और झाड़ी की तरफ़ उसी तरह ताकता रहा। "और बिल्ले, तुम क्या करते रहे?" एलिस ने पूछा। लेकिन बिल्ला बस घुर्र-घुर्र करता रहा।

6



एलिस की नींद हल्की हो चली थी। वह जाग गई थी परंतु पूरी तरह नहीं। उसने अपने पैर सीधे किए और अँगूठों को हिलाया-डुलाया जैसा कि टब्बू हमेशा करता है। धीरे-धीरे उसने आँखें खोलीं और हमेशा की तरह उसकी नज़रें सीधे टब्बू के बिस्तर की तरफ़ गईं। पर यह क्या? वह वहाँ था ही नहीं। कोई भी चीज़ वहाँ नहीं थी जहाँ होनी चाहिए थी और एक मिनट को उसे डर महसूस हुआ कि शायद वह खुद भी अपनी जगह पर नहीं है। धूप की एक किरण पर्दों के बीच से अंदर झाँकी तो उसके साथ ही एलिस को कल सुबह की घटना याद हो आई। पानी ताबड़तोड़ बरस रहा था। कोई बोला, "जैसे कुत्ते-बिल्लियों की बरसात रही हो (*रेनिंग कैट्स एंड डॉग्स*)!" यह बेवकूफ़ी वाली बात थी क्योंकि ऐसा तो कुछ नहीं हुआ था। वहाँ तो एक ही बिल्ला था—टब्बू और वह उसे बागीचे में काफ़ी देर से ढूँढ़ रही थी ताकि छुट्टियों पर जाने से पहले उससे 'अलविदा' कह सके। यूँ तो वह पहले ही उससे कई बार विदाई ले चुकी थी पर अब आखिरी बार फिर उसे पुचकारकर वही कहना चाहती थी।

टब्बू पिछले कुछ दिनों से चल रही हलचल को काफ़ी चुपचाप रहकर देख रहा था क्योंकि पहले भी कई बार वह ऐसा होते देख चुका था। जब वह बहुत छोटा था तब तो कुछ परेशान हो उठता था परंतु अब वह यह जान चुका था कि एलिस की आंटी उसकी अच्छी देखभाल करेंगी। सच बात तो यह थी कि वह उस समय का इंतज़ार कर रहा था जब अपने अलावा और किसी को खुश करना उसके लिए ज़रूरी नहीं होगा। जब चाहो आओ, जब चाहो जाओ, घंटों पड़े सोते रहो—इस तरह की आज़ादी मिले तो कितना मज़ा आएगा! सच कहा जाए तो यह उसके लिए भी छुट्टियाँ मनाने जैसा ही होगा।

कितना पानी बरसा था, एलिस ने सोचा और इतनी लंबी दूरी तय करने के बाद यहाँ भी नज़ारा कुछ अलग नहीं था। पिछली रात बिस्तर में घुसने से पहले उसने खिड़की से बाहर झाँककर देखा था और सोचा था कि समुद्र की एक झलक दिखाई दे सकेगी लेकिन बारिश और कोहरे की घनी परत की वजह से कुछ दिखाई नहीं पड़ रहा था। उसे लगा था जैसे वह दुनिया के एकदम आखिरी छोर पर खड़ी है और अगर उसके आगे रोकने के लिए कुछ नहीं हुआ तो वह धड़ाम से गिर भी पड़ सकती है! नींद में होने पर भी उसके कानों तक समुद्र की लहरों के किनारे की रेत पर तेज़ी से टकराने की आवाज़ आई और तब वह जान गई कि समुद्र अभी वहीं है यानी गलती से अगर वह गिर भी गई तो थोड़ा तैर तो सकेगी। कहीं दूर से उसे माँ की आवाज़ सुनाई दी जो कह रही थीं, "कोई बात नहीं, कल भी तो आएगा।"

अब भी नींद से अलसाई एलिस ने हज़ारों धूल-कणों को धूप की रोशनी में नाचते देखा तो उसने झट से आँखें पूरी खोल लीं, और बिस्तर से नीचे कूद पड़ी—"कल तो आ गया!" वह खाली कमरे से बोली। खिड़की की ओर लपकते हुए वह यह देखकर खुश हो गई कि सब कुछ वैसा ही दिखाई दे रहा है जैसा उसे पिछली गर्मियों का याद था। सफ़ेद चमकीले कोहरे के गुलुबंद दूर पहाड़ों के बीच लहरा रहे थे। समुद्र पीछे को हट गया था। बाहर निकल आई चट्टानों और निर्मल स्वच्छ तालों के बीच गीली रेत का मैदान कुछ और चौड़ा हो गया था तथा खूब चमक रहा था। आज की सुबह समुद्र-तट की ओर जाने

वाला तंग रास्ता भी वहीं था जहाँ वह हमेशा हुआ करता था। 'जल्दी करो, जल्दी' वह खुद से बोली, 'मुझे इतनी सारी चीज़ें करनी हैं कि समझ नहीं आ रहा है कहाँ से शुरू करूँ?' लेकिन इसका हल तुरंत ही निकल आया। "एलिस नाश्ते के लिए आओ", उसके कानों में पड़ा और जितनी जल्दी हो सकता था उतनी जल्दी से नहा-धोकर, कपड़े पहनकर, गर्म ताज़े टोस्ट की महक लेती वह सीढ़ियों से नीचे भागी ताकि पूरे जोश से अपनी छुट्टियों की शुरुआत कर सके।

7



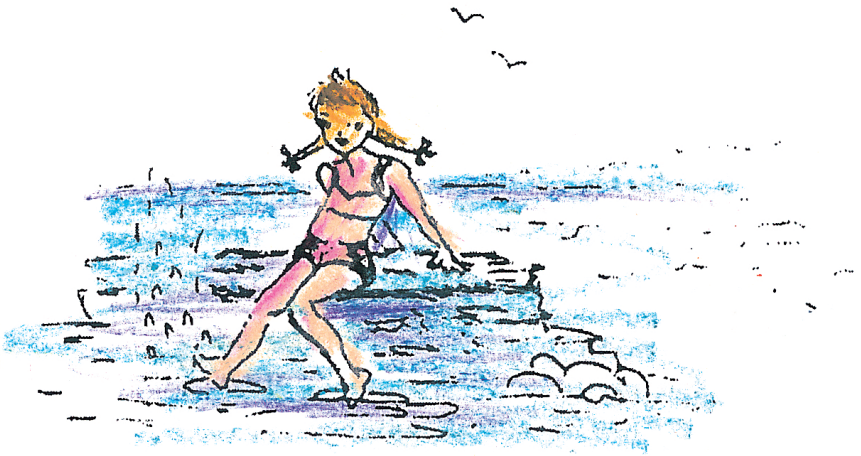
मौसम ने करवट बदल ली थी और उनके वहाँ आने के बाद से हर दिन उसका मिज़ाज पहले से अच्छा होता जा रहा था।

एलिस रेत पर बैठी बागीचा बना रही थी। वह अपने घुटनों के बल सीधी बैठ गई और अपनी मेहनत का फल देखकर खुश हो गई। हाँ, वह सुंदर लग रहा था। छोटे-छोटे पत्थरों से उसमें रास्ता बनाया गया था और फूलों की क्यारियों की मेड़ें सीपियों से बनाई गई थीं। क्यारियों में जंगली थाइम, सी पिंक और लेडीज़ स्लीपर आदि छोटे-छोटे पौधे लगाए गए थे। साथ ही चट्टानों के सिरे पर उगने वाले और भी कुछ छोटे पौधे लगाए गए थे जिनके नाम एलिस को पता नहीं थे। अफ़सोस है कि समुद्र का एक उफ़ान आकर उस सबको बहा ले जाएगा। फूल इकट्ठा करने के लिए रेत के टीलों पर ऊपर-नीचे जाने में कितनी थकान हुई थी और गर्मी भी कितनी थी! समुद्र की सतह पर तैरती छोटी हल्की

लहरें छोटी-छोटी तरंगों में बदल गई थीं और उनकी धीमी हिलोरों की आवाज़ इतनी सुकून देने वाली थी कि एलिस का सिर ढुलकने लगा और वह गहरी नींद में डूब गई। उसने सपना देखा कि जलपरियाँ उसके बागीचे में बैठी चाय पी रही हैं। खूबसूरत मछलियाँ बागीचे के चारों तरफ़ के साफ़ पानी में सुंदर नृत्य कर रही हैं। पर थोड़ा ही समय बीता था कि उसकी आँख जितनी जल्दी लगी थी, उतनी ही जल्दी खुल भी गई। दोपहर का खाना खाने और आगे के कार्यक्रम में शामिल होने वह वापस समुद्र के किनारे पर लौट आई। क्या वह भी टब्बू की तरह *कैट-नैप* यानी 'बिल्ली-झपकी' ले रही थी, उसने खुद से सवाल किया!



8

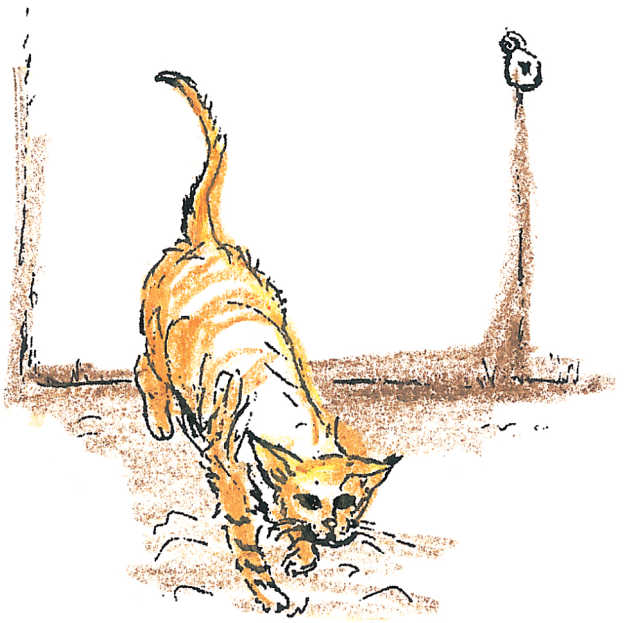


एलिस एक चट्टान पर बैठी थी और उसने अपने पाँव लहरों के पानी में लटका रखे थे। एलिस को लगा कि टब्बू को बताने के लिए जो ढेर सी बातें उसे याद रखनी हैं, उनसे जैसे उसका दिमाग ही फट जाएगा। घर पर बैठा बिल्ला, जैसा कि उसने तय कर रखा था, लंबी-लंबी नींद का मज़ा ले रहा था। यह अच्छा ही था क्योंकि एक हफ़्ते के बाद ही उसका यह सुख-चैन खत्म होने वाला था। अगर वह देख पाता कि समुद्र में सबसे पहले डुबकी लगाने के लिए कैसे एलिस हर सुबह रेतीले रास्ते पर दौड़ती हुई जाती है तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ होता। बिल्ले को तैराकी का कोई शौक नहीं था लेकिन एलिस उसे यह बताने को बेताब थी कि वह अब तैराकी के कितने नए तरीके जान गई है। दिन की पहली डुबकी ज़्यादातर नाश्ते से पहले लगाई जाती थी। एलिस को वह समय सबसे अच्छा लगता था। सब कुछ इतना शांत रहता था, बाद वाली शांति से कितना अलग! उस समय सूरज पूरा नहीं निकला होता था और हवा भी कुछ अलसाई होती थी। अपने प्रभात-गान के बाद चिड़ियाँ भी धीमे-धीमे चहकती थीं और भौंरों व मधुमक्खियों की गूँज की आवाज़ भी दबी-दबी आती थी।

एलिस अपने पैरों से ताल के पानी को छपछपा रही थी जिससे ठंडे पानी के फौवारे-से बिखर रहे थे। उसे पता ही था कि कल बनाए गए बागीचे का वहाँ नामोनिशान भी बाकी न होगा। उसने ऊपर देखा, किनारे के दूसरी तरफ़। यह क्या, समुद्र कहाँ गायब हो गया? अधखुली आँखों से थोड़ा देखने पर दूर एक पतली सी नीली लाइन के रूप में वह उसे दिखाई पड़ा। कुछ कम नीले आकाश के छोर तले आराम-सा करता हुआ। वह सारा का सारा पानी कहाँ गुम हो गया? और उस पानी को कौन बताता है कि कब उसे वापस लौटना है? वह वहीं क्यों नहीं रह जाता जहाँ अब है? कोई उसे यह बात समझा नहीं पाता था। लोग मुश्किल शब्दों का प्रयोग करते थे। यद्यपि एलिस बहुत कोशिश करती थी लेकिन समझ नहीं पाती थी कि लोग क्या कह रहे हैं। यहाँ तक कि चाँद और सूरज से इस बात का कुछ नाता बताया जाता था जो एलिस को बहुत अटपटा लगता था। पहले ही इस बात का विश्वास करना उसके लिए मुश्किल हो रहा था कि वह यहाँ इतनी दूर आकर भी उसी चाँद और उसी सूरज को देख पा रही है जैसा कि वहाँ घर पर टब्बू के सामने चमकते दिख रहे होंगे।

पानी में पैरों को और ज़ोर से छपछपाते हुए एलिस ने तय किया कि इतनी गर्मी में अब यह सब सोचने से कोई फ़ायदा नहीं। और वैसे भी, बिल्ले को तो यह मालूम होगा ही। टब्बू जैसे जादुई बिल्ले कितना कुछ जानते हैं और बता सकते हैं, यह हैरानी वाली बात थी!

9



एलिस ने बेडरूम में चारों तरफ़ नज़र डाली। अब तक वह छुट्टियों वाले अपने इस कमरे को पहचान चुकी थी। उसे भरोसा था कि आज का दिन बहुत सुहावना रहेगा। घर वापस लौटने का समय पास आने लगता था तो हमेशा ऐसा ही होता था। एलिस को इसका दुख तो था लेकिन छुट्टियाँ कभी खत्म ही नहीं होंगी तो फिर वे छुट्टियाँ कैसे कहलाएँगी, उसने खुद से तर्क किया।

रंग-बिरंगी चादरों की तरह एक के बाद एक नया दिन आता रहा था और हर अगला दिन कितनी जल्द बीत जाता था! वो हफ़्तों का समय जो इतना लंबा दिखाई देता था, कहाँ निकल गया? एलिस का मन हुआ कि काश, वह उन सब दिनों को वापस ला सके और दोबारा जी सके, यहाँ तक कि वो बारिश वाले दिन भी!

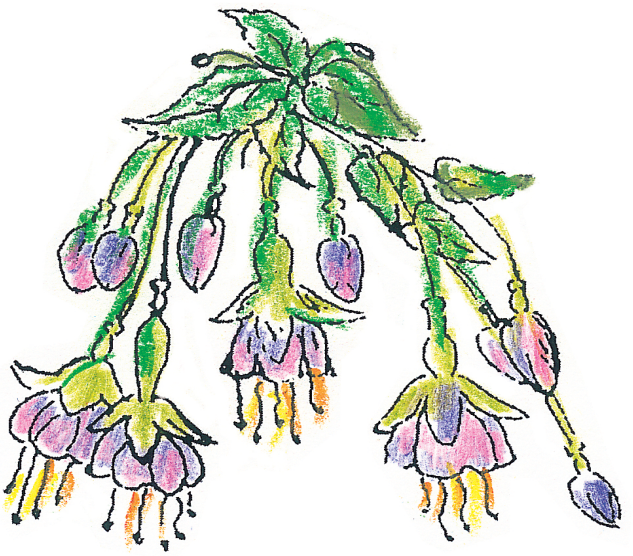
वह चलकर खिड़की के पास पहुँची। पानी में रोशनी की बारीक किरणें जगमगा रही थीं। "देखो! अरे देखो तो!" वह ताज्जुब से बोली, "सारे तारे समुद्र

में गिर पड़े हैं।" लेकिन सब लोग सामान बाँधने में लगे थे और किसी ने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया।

एलिस ने वहाँ सबसे हाथ हिलाकर विदा ली, "अलविदा समुद्र की चिड़ियों... अलविदा रेत और चट्टान और समुद्र! अगले साल तक के लिए अलविदा!" जैसे-जैसे उसकी कार छोटे से प्यारे घर को, उस गाँव को छोड़कर आगे बढ़ती रही, वह पुकारती रही और वे घर वापस लौटने के लिए लंबे सफ़र पर निकल पड़े। रास्ता तय होता गया, वह टब्बू के बारे में सोचने लगी और उसका मन फिर खिल उठा। क्या टब्बू ने उसे याद किया होगा? और जब वे घर पहुँचेंगे, वह उस समय क्या कर रहा होगा?

टब्बू गराज के बाहर खड़ा उनका इंतज़ार कर रहा था और जैसे ही एलिस कार से उतरी, वह उससे मिलने आगे बढ़ा। अपनी पूँछ को सीधी ऊपर उठाए और खुशी के मारे ज़ोर-ज़ोर से घुरघुराते हुए वह एलिस के आगे-आगे घर में घुसा। घर में घुसते ही वे दोनों बिना किसी की परवाह किए अपनी मनपसंद कुर्सी की गद्दियों पर जाकर जम गए। आखिरकार जब उन्हें ढूँढ़ा गया तो दोनों वहीं आराम से गुलमुल होकर साथ-साथ सोते पाए गए।

10



टब्बू सोच रहा था कि एलिस कभी बोलना बंद भी करेगी या नहीं! उसने पाया कि वह कुत्तों के बारे में सोच रहा है और उनसे उसे थोड़ी जलन भी हो रही है। शायद कुत्तों के लिए यह ज़्यादा आसान होता है कि जब वे न सुनना चाहें तो न सुनें। 'मैं बहुत बेवकूफ़ी वाली बात सोच रहा हूँ,' उसने खुद से कहा, 'मैं बिल्कुल नहीं चाहूँगा कि किसी भी सूरत में कभी एक दीन-हीन कुत्ते के जैसा दिखाई दूँ,' और वह बातों भरी एक और सुबह के लिए मन से तैयार हो गया।

लोग कह रहे थे कि इस बार गर्मियाँ अच्छी रहेंगी और एलिस का भी यही खयाल था। मौसम का फ़ायदा उठाते हुए वे एक बार फिर अपने मनपसंद चैरी के पेड़ के नीचे आ पहुँचे थे। फल के बीज घास पर छितरे हुए थे। चिड़ियाँ कभी चैरी का कोई फल उनके लिए साबुत नहीं छोड़ती थीं। एलिस की माँ को चैरी हमेशा फलवाले से खरीदकर लानी पड़ती थीं। बिल्ला अपना मुँह खूब ज़ोर से साफ़ कर रहा था। उसका पूरा ध्यान अपने पैरों पर पड़ी अदरक जैसी भूरी गोल धारियों पर था। उसकी ओर देखते हुए एलिस को बातचीत का एक और विषय सूझ आया।

"बिल्ले, तुम्हें मालूम है," वह बोली, "समुद्र के किनारे, जहाँ हम ठहरे थे वहाँ से थोड़ी दूर पर ही एक बहुत अजीब सा बूढ़ा आदमी रहता है। उसकी झोंपड़ी सफ़ेद रंग की है और उसके आगे फ़्यूशिया की बड़ी झाड़ियाँ उगी हैं। वे आगे तक आकर सड़क के ऊपर से होती हुई दूसरी तरफ़ जाती हैं। वहाँ की बाड़ में लगी वैसी ही और बड़ी झाड़ियों से जुड़कर एक खूबसूरत सी अर्धगोलाकार जगह बना देती हैं। वे बहुत सुंदर दिखती हैं लेकिन मुझे तो सबसे ज़्यादा अच्छा लगता है वहाँ गिरती हुईं कलियों को 'फट्' से पिचकाते चलना – ज़ाहिर है जब कोई देख न रहा हो तब! पिछले साल वह बूढ़ा आदमी अपनी बाड़ को काले रंग से रंग रहा था। शायद यह इत्तफ़ाक ही रहा होगा कि उसने अपने आधे चेहरे को भी चौड़ी काली पट्टी से रंग रखा था। छुट्टियाँ-भर मैं उस काली पट्टी को देखती रही और वह पूरे समय वैसी की वैसी काली स्याह बनी रही। उसका बाकी चेहरा कभी पूरी तरह साफ़ नहीं दिखता था। तुम क्या कहते हो बिल्ले, क्या वह कभी नहाता न होगा? मैं अक्सर उसके बारे में सोचा करती थी और इस साल जब वहाँ गई तो मैं जानने को बहुत उत्सुक थी कि धारी अब भी वैसी ही है क्या! हम वहाँ से गुज़रे, उस समय वह अपने बागीचे में खुदाई कर रहा था और धारी गायब हो चुकी थी। लेकिन बिल्ले, उसका चेहरा अब भी उतना ही गंदा था, बल्कि कहना होगा पहले से भी ज़्यादा गंदा! मैं तय नहीं कर पा रही हूँ कि वह धारी अपने आप ही धीरे-धीरे गायब हो गई या फिर वह कभी-कभी नहाता रहा होगा? तुम्हारा क्या खयाल है बिल्ले?"

टब्बू को इस बात से कुछ लेना-देना नहीं था और उसने आह भरते हुए सिर हिला दिया। "बहुत सी अनसुलझी पहेलियों में एक है यह," उसके मम्मी-पापा ने कहा था और अब एलिस ने भी आह भरी।

11



एलिस अपनी ज़िंदगी में आने वाली नयी-नयी पहेलियों से काफ़ी हैरान थी। आँधी के बाद की उस सुबह की ही बात लो। पूरी रात समुद्र चट्टानों से सिर टकराता हुआ गुस्से से गरज रहा था। हवा भी तेज़ चल रही थी जिससे बारिश खिड़की से पूरी ताकत से टकरा रही थी और गज़ब का शोर हो रहा था। सुबह होने पर भी बाहर शोर-शराबा कम नहीं हुआ था और समुद्री चिड़ियों के चिचियाने की आवाज़ भी उसमें शामिल हो गई थी। "आज सुबह तैरना नहीं हो सकेगा।" उसने सोचा था और उसका यह सोचना ठीक ही था। नाश्ते के लिए सीढ़ी से नीचे उतरते हुए अपने भाइयों की बातचीत उसके कानों में पड़ी। "कोई आँधी-तूफ़ान", उनमें से एक बोला, और "आज सुबह तो हमें बहुत से *फ़्लोटसैम* और *जैटसैम* देखने को मिलेंगे", जवाब आया।

"टब्बू, तुम्हें पता है *फ़्लोटसैम* और *जैटसैम* क्या होता है?" उसने पूछा। "यह अच्छी चीज़ नहीं होती", उसने टब्बू को बताया। "लहरें इसे लाती हैं और यह पूरे समुद्र तट पर बिखर जाता है – समुद्री खरपतवार से उलझी पेड़ों की टूटी हुई डालियाँ, प्लास्टिक के डिब्बे, रस्सियाँ, फटे कपड़े, यहाँ तक कि अलग-अलग तरह के मोज़े और टूटे सैंडल। हमने कई खाली डिब्बे जिन पर विदेशी भाषा में कुछ लिखा था और डरावनी, पारदर्शी जैलीफिश भी बालू में धँसी देखी थी। कितनी गंदगी फैली थी!" और उसने उस गंदगी को याद करके अपनी नन्ही नाक सिकोड़ ली। बिल्ले ने सामने खाली जगह को ताका और बोला, "कभी-कभी जब मुझे लगता है कि मुझे अपने पिछले जन्मों की कुछ बातें याद आ रही हैं तो मुझे बहुत अजीब सा महसूस होता है। जैसे आज मुझे पक्की तौर पर यह महसूस हो रहा है कि काफ़ी पहले मैं एक नाविक बिल्ला था।"

एलिस अचरज से आँख फैला कर उसकी बात सुनती रही। बिल्ले ने बताया कि कैसे जब उसका जहाज़ समुद्र में कहीं दूर था, तो नाविकों ने उस पर से कूड़ा नीचे फेंक दिया था। दूसरे देशों से आने वाले जो जहाज़ उन्हें वहाँ दिखे थे, उन्होंने भी वैसा ही किया था। यही वजह थी कि एलिस को डिब्बों और बोतलों पर अलग-अलग देश की भाषाएँ दिखाई दी थीं। जब तूफ़ान आता था, तो लहरें (एलिस अब भी इन्हें अच्छी तरह नहीं समझ पाई थी) इन सब चीज़ों को यहाँ-वहाँ आगे-पीछे ले जाती थीं। आज अगर वे किसी इंग्लिश समुद्र-तट पर हों तो कल बहकर कहीं भी, किसी भी जगह पहुँच सकती थीं–फ्रांस, जर्मनी, इटली, अमेरिका, यहाँ तक कि रूस भी।

"क्या तुम इन सब देशों में जा चुके हो?" एलिस ने उससे पूछा, "और तुमने जहाज़ पर रहकर किया क्या?" बिल्ले को बहुत ठीक से तो कुछ याद नहीं आ सका लेकिन उसे एक बात पक्की तरह याद थी और वह यह कि बहुत से चूहे और चुहियाँ उसने पकड़े थे जिसके कारण वह अच्छे खाने और अच्छे रहन-सहन का हकदार बन सका था! उसने यह भी बताया कि जहाज़ पर हर किसी ने उसकी तारीफ़ की थी और उसे प्यार किया था।

"मुझे और भी कुछ बताओ," एलिस ने विनती की। लेकिन बिल्ला ऐसा नहीं कर सका। "ऐसा कभी-कभार होता है कि बातचीत में कोई ज़िक्र आने पर यादों का कुछ हिस्सा वापस लौट आए। शायद हमें इस बात की छूट नहीं है कि पूरे नौ जन्मों का लेखा-जोखा याद रख सकें।" उसने अफ़सोस के साथ कहा। एलिस ने उसे बाँहों में भर लिया।

"कोई बात नहीं, यह तो वाकई ज़्यादती होगी कि तुम्हारे इस छोटे से प्यारे सिर से इतनी सारी बातें याद रखने की उम्मीद की जाए," वह धीमे स्वर में प्यार से बोली।

12



एलिस का मिज़ाज बुरी तरह बिगड़ा हुआ था। टब्बू को तुरंत इस बात का पता चल जाता था जब वह देखता था कि एलिस घर से तेज़ी से निकलकर झूले की सीट पर 'धप्प' से बैठ गई है और पूरी ताकत लगाकर ऊँची-ऊँची पींगें तो ले रही है लेकिन उसमें उसे मज़ा बिल्कुल नहीं आ रहा। रोडोडेंड्रॉन की झाड़ी के पीछे छुपकर वह एलिस पर निगाह रख रहा था। धीरे-धीरे झूले का वेग कम हुआ और फिर वह पूरी तरह रुक गया। एलिस उस पर से कूद पड़ी और नीचे घास पर लुढ़क गई। वह घास के तिनकों को तोड़ रही थी और उसकी उँगलियाँ रास्ते के किनारे पड़े छोटे-छोटे कंकड़ों को उठाकर ज़ोर-ज़ोर से हवा में उछाल रही थीं। टब्बू उठ खड़ा हुआ, अपनी कमर मोड़ी और एलिस की तरफ़ चल दिया। "आज किसी का मूड बहुत खराब हो रहा है," वह बोला। "पता नहीं वजह क्या है?" और अपना सिर घुमाकर वह बेपरवाही-सी दिखाते हुए अपना कंधा और पीठ साफ़ करने के लिए आगे बढ़ गया। कुछ मिनट ऐसा करने के

बाद जब उसे लगा एलिस का मूड थोड़ा ठीक हो गया है तो वह बोला, "जब तुम इस तरह के मूड में होती हो तो अच्छी नहीं लगती हो।"

एलिस ने मुँह बिचकाया और एक अनचाही मुस्कान उसके चेहरे पर तैर गई। एक बिल्ला ही था जो उससे ऐसी बात कहने की हिम्मत कर सकता था। तब भी वह ज़ोर से बोले बिना न रह सकी, "यह बिल्कुल ठीक बात नहीं है।" "ओह!" बिल्ला बोला। "सारे के सारे लड़के डैडी के साथ दिन भर के लिए बाहर चले गए हैं और कहते हैं कि मैं जाने के लिए बहुत छोटी हूँ। मैं अकेली यहाँ बची हूँ और यहाँ ऐसा कुछ करने को भी नहीं है जिसमें मज़ा आए। यह बिल्कुल ठीक बात नहीं है।" "मैं ऐसा नहीं मानता," बिल्ले ने शांति से कहा। उसने एलिस को सलाह दी कि वह मन हल्का करने को पिछले हफ़्ते की बात याद करे।

एलिस छोटी ज़रूर थी लेकिन थी अपनी उम्र के हिसाब से काफ़ी समझदार। शांत होते हुए उसने वही किया जैसा टब्बू ने कहा था। उसे वे बातें याद हो आईं जब लड़के घर पर ही रहे थे और उसने खुद बहुत मज़ा किया था। थोड़े दिन पहले की ही तो बात है उसकी माँ उसे ट्रेन से लंदन ले गई थीं। हमेशा की तरह कार से जाने के बजाय ट्रेन से जाने में अलग मज़ा आया था और यह उसके लिए खास इनाम जैसा था। "सिर्फ़ हम दोनों जाएँगे और अपने हिसाब से घूमे-फिरेंगे," उन्होंने कहा था। लौटकर एलिस ने अपने लिए खरीदी गई सुंदर चटकीली एनोरेक (हुडवाली वॉटरप्रूफ़ जैकेट) से बिल्ले का खूब मन बहलाया था और वे जीन्स और टी-शर्ट्स भी उसे दिखाई थीं जो उसके लिए खरीदी गई थीं। उसने दोपहर को खाए गए खास खाने की बात भी बिल्ले को पूरी बताई थी और शाम की चाय के बारे में भी बताया था जब मुलायम सैंडविच और क्रीम केक खाकर उसे बहुत मज़ा आया था। बिल्ले ने बताया था कि लड़कों ने दोपहर को जो खाना खाया था वह बहुत मामूली था। उसे उम्मीद थी कि उसे भी बचा-खुचा कुछ खाने को मिलेगा लेकिन कुछ बचा ही नहीं था।

अब तक एलिस का गुस्सा पूरी तरह ठंडा हो चुका था लेकिन उसकी शिकायतों ने टब्बू को वे बातें याद दिला दी थीं जिन पर उसने काफ़ी समय से गौर नहीं किया था। उसे यह खयाल आए बिना न रह सका कि एलिस बहुत

भाग्यशाली लड़की रही है। "तुम नहीं जानती तुम्हारा भाग्य कितना अच्छा है," वह बोला। "तुम्हारे माँ और पापा दोनों तुम्हें प्यार करते हैं और तुम्हारी पूरी देखभाल करते हैं। तुम्हारी माँ तो ज़्यादातर यहीं होती हैं ताकि देखती रहें कि तुम खुश रह सको और तुम्हें कोई चोट न पहुँचाए। एक नन्ही सी बिल्ली के मामले में तो यह बात अलग ही होती है। उसे तो पूरी तरह बड़ा होने से पहले ही सीखना पड़ता है कि अपनी देखभाल खुद कर सके।"

"अच्छा... यह तो मैंने कभी नहीं सोचा लेकिन बिल्ली के बच्चे रहते तो अपनी माँ के साथ ही हैं, हैं न टब्बू?" टब्बू कुछ अनमना-सा हो उठा और बोला, "यह सब और कई बातों पर निर्भर है।" "कौन सी बातें?," एलिस ने प्रश्न किया। तब उसे पता चला कि कुछ लोग क्रूर होते हैं और बिल्ली को उसके बच्चों से तुरंत अलग कर देते हैं। कुछ दूसरे, जिनका घर और बागीचा बड़ा होता है, माँ-बिल्ली और उसके बच्चों को हमेशा साथ रहने देते हैं, परंतु ज़्यादातर होता यह है कि उन बिल्ली के बच्चों के लिए अच्छे परिवार ढूँढ़ लिए जाते हैं जो कुछ हफ़्तों में ही उन्हें अपने यहाँ लेकर चले जाते हैं। हाँ, फ़ार्मों पर तो वे सब इकट्ठे रहते हैं – एक बड़े से, मिले-जुले और अस्त-व्यस्त परिवार की तरह। "लेकिन मैं तुम्हें यह सब क्यों बता रहा हूँ? तुमने तो बहुत से बिल्ली के बच्चों को देखा है और उनके बारे में सब जानती हो।" एलिस हँस पड़ी और उसने टब्बू को बताया कि उसे उसके मुँह से यह सब सुनना अच्छा लगता है और वह उससे यह जानना चाहती है कि क्या वह खुद अपनी माँ के साथ लंबे समय रह सका था।

इसलिए टब्बू ने उसे बताया, "औरों से काफ़ी ज़्यादा समय, क्योंकि मैं पैदाइश के समय ज़रूरत से ज़्यादा छोटा था। मेरी माँ बहुत ही गज़ब की थीं। उन्होंने मुझे यह सब सिखाया – कैसे नहाओ और बाल सीधे करो, कैसे नाज़ुक तरीके से खाना खाओ, सफ़ाई की आदतें डालो, कब खेलो और कब झपटो।" "क्या तुम्हारी माँ ने तुम्हें जादू भी सिखाया?" "नहीं, वह तो मैं बड़ा होने पर अपने आप सीख गया । बीच में बोलना मत," बिल्ले ने अपने खयालों को समेटा और आगे बोला, "मेरा भाई और मेरी बहन तो छह हफ़्ते के होते ही गोद

ले लिए गए थे। माँ और मैं प्यार से साथ-साथ रहे और वह मुझे घुर्र-घुर्र की आवाज़ के साथ सुलाती थी।"

"और फिर, तुम हमारे साथ रहने आ गए," एलिस उत्साह से बोली। "नहीं, एकदम तो ऐसा नहीं हुआ। उससे पहले और बहुत कुछ हुआ था। एक दिन की बात है, मेरी माँ झपकी ले रही थी और मैं बेचैन-सा हो रहा था। मैंने तय किया कि मैं अब वाकई बड़ा हो गया हूँ और इस उम्मीद के साथ कि उसे पता नहीं चल पाएगा, मैं सिकुड़कर बाड़ के छेद से बाहर निकल आया और जितनी तेज़ी से भाग सकता था, भाग गया। इसमें मज़ा आया लेकिन फिर एकाएक मुझे बहुत थकान महसूस हुई और मैं सो गया। जब मैं जागा, अँधेरा हो चुका था और सर्दी भी बढ़ गई थी। मैं सब बड़ापन भूल गया था, माँ के पास घर वापस जाना चाहता था लेकिन मुझे पता ही नहीं था कि मैं कहाँ हूँ। मैं रोने लगा और कभी इधर दौड़ा, कभी उधर पर किसी ने मेरी आवाज़ नहीं सुनी। मैंने तो उम्र-भर सिर्फ़ अपना एक घर देखा था जो खेतों से घिरा था और अब तो घरों की कतार पर कतार दिखाई पड़ रही थी। इनमें हर एक के आगे थोड़ी खाली ज़मीन थी और उनके बीच चहारदीवारी खड़ी थी। मैं उनके बीच से होकर भागा, दीवारों के ऊपर से कूदा। कई दरवाज़े खुले हुए थे, उनमें घुसा, परंतु किसी ने मुझे नहीं पुचकारा। उस समय तक मुझे पता नहीं था कि दुनिया में कुत्ते भी हैं। वे बहुत बड़े थे और मुझ पर भौंके तो मैं डर से थर्रा उठा।"

"बेचारा बिल्ला!" एलिस फुसफुसाई और अपनी बाँहें टब्बू के गले में डाल उसे अपने से सटाकर प्यार किया। "मुझे बहुत भूख लगी थी," टब्बू को याद आया, "और मैं बहुत परेशान हो उठा था। अब तक मैं बहुत डर भी गया था और हर किसी को देखकर छुप जाता था। मेरा खयाल है कि मैं कई दिनों तक भटकता रहा और तब मैंने खुद को वापस खेतों में पाया। मैं बहुत गंदा हो चुका था और कमज़ोरी की वजह से अपने को साफ़ भी नहीं कर सका था। पर किसी तरह घिसटते हुए खेत पार किया और एक सुनसान गली में जा पहुँचा। बहुत धीरे-धीरे चलते हुए आखिर में गली के दूसरे सिरे पर एक फाटक के सामने पहुँच गया। मैंने अंदर झाँका। उस ओर बागीचा बहुत सुंदर था और उसके बीच

बने रास्ते पर फूलों की टोकरी हाथ में लिए कोई आ रहा था जो बहुत सुंदर भी दिख रहा था। मैं बहुत कमज़ोर और डरा हुआ तो था ही, फिर भी 'म्याऊँ' कहने के लिए मुँह खोला लेकिन उसमें से कोई आवाज़ बाहर न निकली। फूलों वाली महिला ने फाटक खोला और मुझे उठाते हुए बोली, 'बेचारी नन्ही सी जान!' मुझे बाँहों में भरकर वह अंदर ले गई, मुझे खाना खिलाया, पुचकारा। इतना प्यार और आराम पाकर मैं फिर खुश हो गया। मुझे याद नहीं आ रहा कितना समय बीतने के बाद मेरा पुराना घर ढूँढ़ा जा सका। वहाँ रहने वाली महिला ने मुझे बताया कि जब मैं खो गया था, मेरी माँ बहुत रोई थी और मुझे बहुत याद करती थी जैसा कि मैं भी करता था, पर बाद में हम दोनों को अलग-अलग रहने की आदत पड़ गई थी। उस पुराने घर वाली महिला ने यह भी बताया कि जल्दी ही मेरी माँ के और बच्चे होने वाले थे जिनकी उसे देखभाल करनी थी। मेरी देखभाल करने वाली नयी प्यारी सी महिला ने उससे पूछा कि क्या अब वह मुझे अपने साथ ले जा सकती हैं क्योंकि उनका पूरा परिवार मुझे प्यार करता था।

तब यह तय हो गया कि मुझे उनकी बात मान लेनी चाहिए।"



एलिस इंतज़ार कर रही थी कि वह आगे भी कुछ कहेगा लेकिन टब्बू हवा में ताकने लगा था और अब भी पिछली यादों में डूबा था। "यह बात तो शायद बरसों पहले की होगी," वह बोली। "हाँ, तुम तो तब तक पैदा भी नहीं हुई थीं।

उसके बाद से मैं कई बार मुसीबतों में पड़ चुका हूँ परंतु वह पहले जैसी डरावनी घटना कभी नहीं घटी। हालाँकि उसके अंत में मुझे खुशी मिली थी लेकिन मैं उसके बारे में सोचना नहीं चाहता।"

"और वह घर कौन सा रहा होगा, बिल्ले?"

"बुद्धू कहीं की! यही तो था," अपनी हरी आँखें फैलाकर बिल्ला बोला। "आज सुबह से क्या हम तुम्हारी ही प्यारी सी और दयालु माँ की ही बातें नहीं करते रहे हैं?"

13



टब्बू थोड़ा निराश था जो उसके लिए आम बात नहीं थी। वह किसी से मिलना नहीं चाहता था और चाह रहा था कि कोई उसे तंग न करे, खास तौर पर एलिस! बागीचे के उस पार लगी बाड़ के नीचे किसी तरह घुसकर और फिर नाली की बगल में अपने पेट के बल खिसककर जाते हुए कुछ हफ़्तों पहले उसने ज़मीन में एक आरामदायक गड्ढा-सा ढूँढ़ लिया था। वह उसके लिए बिल्कुल ठीक नाप का था और उसके ऊपर को लगी लंबी और कुछ झुकी घास की वजह से वह जगह और आरामदेह हो गई थी। साथ ही वहाँ एकांत भी था।

टब्बू एक बुद्धिमान बिल्ला था लेकिन इधर कुछ समय से उसे ऐसा लग रहा था जैसे उसकी जादुई शक्तियाँ कम हो रही हैं। जब से उसने यह सच अपने से कबूल किया था उसे कभी यह पक्की तरह पता नहीं चल सका कि यह जादुई शक्तियाँ उसके पास आईं कहाँ से थीं और वह कैसे उन्हें काम में लाता

था। लेकिन काम तो वे ज़रूर करती थीं। कल की ही तो बात है एलिस को वह अपने बचपन की सारी बातें, सारे अनुभव बता सका था। यह ज़रूर है कि इतनी सब बातें करने से उसे अब थकान हो आती थी। इस समय वह यह सोच रहा था कि ये सारी बातें उसने एलिस को कैसे समझाई होंगी। एलिस की तरह शब्दों का इस्तेमाल तो उसने नहीं किया था। आज से पहले तो उसने इस पर ध्यान ही नहीं दिया था। शायद वह बूढ़ा हो चला है और अगर एक दिन ऐसा हुआ कि वह एलिस से बात ही न कर पाया तो? 'तब हम क्या करेंगे?' बेचारे बिल्ले ने सोचा और बहुत सोचा। ऐसा करके वह बहुत थक गया और आखिरकार गहरी नींद सो गया।

एलिस भी सोच-विचार के मूड में थी लेकिन उसने अपने को बिल्ले की तरह कहीं छुपा नहीं लिया था। बिल्ले को यह पता नहीं था लेकिन एलिस उसकी गुप्त जगह का कुछ समय पहले पता लगा चुकी थी। आज सुबह उसने देखा था कि टब्बू थका हुआ लग रहा है और इसीलिए जब वह चुपचाप बाहर खिसका, एलिस ने न देखने का बहाना किया।

वह झूले पर धीरे-धीरे झूल रही थी। उसका मन उन बातों को फिर सोचने लगा जो कल टब्बू ने उसे बताई थीं। 'हाँ', वह खुद से बोली, 'मैं हमेशा यह उम्मीद क्यों करती हूँ कि हर बार इनाम मुझे मिले!' और उसे ध्यान आया कि उसके डैडी ऑफ़िस से कितने भी थककर क्यों न लौटें, उसे कहानी सुनाने और उससे बातें करने का समय निकाल ही लेते थे। एलिस को यह भी खयाल आया कि वह कितनी भाग्यवान है कि सारी उम्र उसे टब्बू का साथ मिला। और किसी बच्चे के पास साथी के रूप में टब्बू जैसा जादुई बिल्ला नहीं था। एक दूसरा विचार भी उसके मन में आया। बिल्ले का जादू बहुत खास तरह का था क्योंकि वह शब्दों में बात नहीं करता था और तब भी वे दोनों एक दूसरे की बात अच्छी तरह समझ लेते थे। "मैं सचमुच टब्बू से बहुत प्यार करती हूँ," वह ज़ोर से बोली, "और मैं मन से चाहती हूँ कि वह हमेशा छोटा ही बना रहे। मुझे चिंता है क्योंकि आजकल वह ज़्यादा थक जाता है। शायद मुझे उसका मन बहलाने की ओर ज़्यादा ध्यान देना चाहिए। सब कुछ उस पर ही छोड़कर बैठ नहीं जाना

होगा।" ऐसा कहते हुए उसने टब्बू को पुकारा और पुकारते समय इस बात का ध्यान रखा कि वह टब्बू के छुपने की जगह की ओर न देखे।

कुछ ही देर में टब्बू चैरी के पेड़ के नीचे उनकी मनपसंद जगह पर एलिस के बगल में आ बैठा। एलिस घर के अंदर होकर आई थी और उसके हाथ में एक किताब थी जिसे उसने खोला और अपने घुटनों पर टिका लिया। "बिल्ले, सुनो! अब मैं खुद काफ़ी पढ़ सकती हूँ और बहुत लंबे-लंबे शब्द न हों तो पूरा का पूरा पढ़ सकती हूँ। इसलिए अब से मैं तुम्हें कभी-कभी, जब तुम्हारा सोने का मन नहीं होगा, किताब पढ़कर सुनाया करूँगी ताकि तुम्हें ज़्यादा आराम मिल सके।"

टब्बू ने घुर्र-घुर्र की आवाज़ के साथ एलिस के सुझाव का स्वागत किया और एलिस ने पढ़ना शुरू कर दिया। "एक समय की बात है...।" इसके बाद भी वे अक्सर बातें करते थे। अब बिल्ले को *सिंड्रैला, स्लीपिंग ब्यूटी* और ऐसी ही कई सारी कहानियाँ सुनने को मिलीं जो उसने पहले नहीं सुनी थीं। इनमें उसे सबसे ज़्यादा पसंद थी – *पुस इन बूट्स* अर्थात् जूते पहनने वाली बिल्ली की कहानी।

14



बिल्ले की दोस्त

एक दिन वह आया जब एलिस बिल्ले से बोली, "अगले हफ़्ते से मुझे स्कूल जाना होगा," और स्कूल की पोशाक पहने वह घूम-घूमकर बिल्ले को दिखाने लगी। बिल्ले को उस पोशाक में एलिस अच्छी लगी और उसने कहा भी कि वह उसमें बड़ी-बड़ी सी लग रही है। साथ ही वह उसके हैट को ताकता रहा जिस पर एक रिबन और बैज लगा हुआ था। पूरे समय वह खुशी से घुर्र-घुर्र करता रहा जो एलिस को बहुत भाया।

पूरी गर्मियों-भर टब्बू को यह एहसास होता रहा था कि ऐसा दिन जल्दी आने वाला है और अब वह सचमुच उस दिन के आ पहुँचने से खुश नहीं था। उसने तय किया कि वह खुद के लिए एक जादुई करामात करने में पूरा दम लगा देगा। समुद्र तट से लौटने के कुछ दिन बाद ही एलिस ने उसे झाड़ियों की बाड़ की तरफ़ निहारते देखा था लेकिन तब टब्बू ने इस बात का पूरा ध्यान रखा था कि एलिस को इस बात का पता न चल पाए कि झाड़ियों के पार उसे क्या

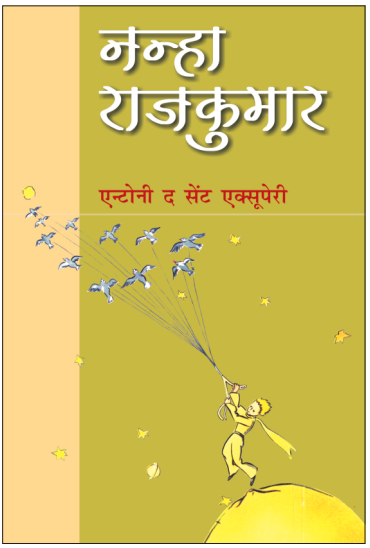
दिखाई दे रहा था। एलिस को बताने का शायद यही सही मौका है, उसने सोचा। वह कुछ कह पाता, इससे पहले ही एलिस उससे पूछ बैठी कि जब वह स्कूल में होगी, तब उसके पीछे टब्बू कैसे समय बिताएगा। साथ ही यह भी बोली कि उसे यह सोचकर बुरा लग रहा है कि टब्बू तब अकेला रह जाएगा।

अब टब्बू की बारी थी। वह एलिस को झाड़ियों के पास ले गया और लंबी घास के नीचे दुबकी एक छोटी सी बिल्ली उसे दिखाई, जो उतनी छोटी भी नहीं थी लेकिन टब्बू के मुकाबले काफ़ी छोटी थी। उसके बाल क्रीम और हल्के भूरे रंग के थे, पूँछ धारीदार थी और गर्दन के बाल गाढ़े रंग के थे जिससे ऐसा लगता था मानो उसने माला पहन रखी हो। आँखें सुनहरे रंग की थीं। उसका छोटा सा नुकीला चेहरा सलोनापन लिए था और साथ ही उससे उत्सुकता भी झलक रही थी। बिल्ला उसके इर्द-गिर्द चक्कर काटने लगा और उसने एलिस को बताया कि हालाँकि ऐसा नहीं है कि वह घर का रास्ता भूल गई हो बल्कि असली बात यह है कि उसे कोई प्यार नहीं करता, वह अकेली और घबराई हुई है और पिछले कई दिनों से झाड़ियों के उस तरफ़ से हम दोनों को देखती रही है।

एलिस को पक्की तौर पर लगा कि बिल्ला उससे यह कहना चाह रहा है कि उसकी यह छोटी सी मित्र बिल्ली भी घर के अंदर उन सबके साथ रहे। यह काम तो अकेले माँ ही कर सकती थी। एलिस माँ को ढूँढ़ने चल पड़ी और बागीचे से होकर लौटते समय उसने माँ को उस छोटी बिल्ली के बारे में बताया। उन्होंने झाड़ियों की तरफ़ नज़रें डाली तो टब्बू ने फिर घास के चारों तरफ़ चक्कर काटा। उसने अपनी 'खूबसूरत दोस्त' को अपनी बड़ी-बड़ी हरी आँखों से निहारा और छोटी बिल्ली ने भी अपनी सुंदर सुनहरी आँखें याचना के अंदाज़ में ऊपर को उठा दीं।

"इन पर कौन फिदा न हो जाएगा!" एलिस की माँ बोलीं, "यह फ़ार्म की बिल्लियों में से एक है। जब तुम स्कूल जाने लगोगी तो टब्बू अकेला रह जाएगा और मैं जानती हूँ कि अगर हम इस छोटी बिल्ली को गोद लेना चाहेंगे तो जनाब स्टब्स को कोई एतराज़ न होगा।"

और अब टब्बू को यह डर नहीं रहा कि एक दिन उसकी जादुई शक्तियाँ खत्म हो जाएँगी और एलिस ने तो इस बारे में सोचा तक नहीं था! चाहे जो हो जाए, उसका अपना जादुई बिल्ला तो हमेशा टब्बू ही रहेगा।



नन्हा राजकुमार

(द लिटिल प्रिंस)

एन्टोनी द सेंट एक्सूपेरी

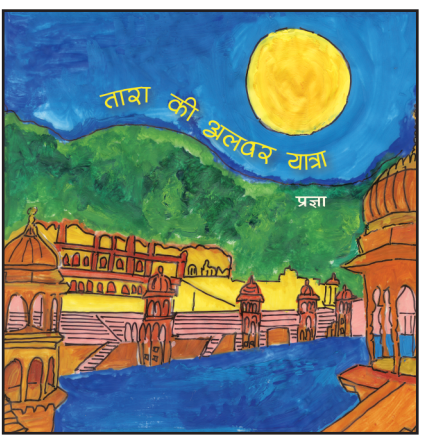
अनुवाद – देवी प्रसाद

Rs 65.00 / pp 80 / 2007

तारा की अलवर यात्रा

प्रज्ञा

Rs 65.00 / pp 60 / 2008





बिएट्रिस कोरदो

(1913–2007)

बिएट्रिस कोरदो ने चित्र बनाना बहुत कम आयु से ही शुरू कर दिया था। वे अक्सर बीमार रहती थीं और बीमारी की लंबी अवधि में बिस्तर पर रहते हुए ही चित्र बनाने का अभ्यास करती रहती थीं। इस तरह वे एक विलक्षण स्वयंसिद्ध कलाकार बनीं और उन्होंने *मैनचेस्टर स्कूल ऑफ़ आर्ट* में प्रवेश लिया। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान उनके पति भारत में नियुक्त थे। इस बीच घर में अकेले रहते हुए बिएट्रिस ढेरों सादी प्लेटें और मग खरीद लाया करती थीं और उन्हें परीकथाओं के पात्रों और पशु-पक्षियों के जीवंत चित्रों से सजाया करती थीं। बिएट्रिस को पशुओं से अत्यधिक स्नेह था और इनमें भी विशेष रूप से बिल्लियों से। टब्बू यानी इस पुस्तक का नायक-बिल्ला उस कहानी के काल्पनिक नायक के रूप में सजीव हो उठा जो बिएट्रिस ने अपने पड़ोस में रहने वाली एक नन्हीं बालिका एलिस के लिए लिखी थी। टब्बू की कहानी और बिएट्रिस के चित्र भारत में भी बहुत से बच्चों के लिए कहानियाँ लिखने व स्वयं उनके चित्र बनाने का प्रेरणा-स्रोत बन चुके हैं।



2056

विद्ययाऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-81-7450-844-7